महावीर विक्रम बजरंगी ।
कुमति निवार सुमति के संगी ।।

भारतीय विद्या मनीषी
पं. महेश दत्त शर्मा 'गुरुजी'

महावीर विक्रम बजरंगी। कुमति निवार सुमति के संगी ।।

सरलार्थ :- हे हनुमान जी। आप महावीर है। विशेष पराक्रम वाले है, वज्र के समान अंग वाले है। दुर्बुद्धि को निवारण कर सुबुद्धि के संगी अर्थात सुबुद्धि वालों के सहायक है।

विशेषार्थ :- महावीर नाम से गोस्वामी जी ने 'ईष्ट रूप' की वन्दना की इस प्रकार भक्त कवि तुलसी ने तीन बार हनुमान वन्दना की।

महावीर हनुमान कहि, पुनि कह पवन कुमार। इष्ट, भक्त, अरू, देव, लखि, वन्दऊँ कवि त्रयबार ।।

इस महावीर नाम की विशेषता देखकर गोस्वामी जी ने इस नाम के बाद हनुमान जी की वन्दना की।

'महावीर विनबऊँ हनुमाना' मैं उन हनुमान जी से विनय कर रहा हूँ जो महावीर है। वीर कौन है ? -

महा अजय संसार रिपु, जीति सकई सो वीर ।। लंका काण्ड/८०क ।। प्रभु श्रीराम भी वीर ही है। 'हा जग एक वीर रघुराया' परन्तु आप राघव कर कमल स्पर्श से महावीर बन गये।

पाछे पवन तनय सिरू नावा, जानि काज प्रभु निकट बोलावा। परसा सीस सरोरूह पानी, कर मुद्रिका दीन्ह जन जानी।। कि.का./२३/१०।।

कार्य सिद्धि का अनुमान हनुमान से ही था। अतः समीप बुलाकर मुद्रिका प्रदान करना महावीरता का प्रमाण-पत्र देना ही है। यह नाम हनुमान जी का विशेषण है। इनकी यह विशेषता किष्किन्धा, सुन्दर एवं लंका काण्ड में पूर्ण दृष्टिगोचर होती है।

आपकी महावीरता को देखकर इन्द्र, लोकपाल विष्णु, रूद्र, ब्रह्मा की आंखे चकाचौंध हो गई -

कौतुक बिलोकि लोकपाल हरि हर विधि, लोचननि चकाचौंध चित्तनि खभार सो।। बल कैंधों वीर रस, धीरज कै साहस के, तुलसी शरीर धरे, सबनि के सार सो ।। ह.बा./४।।

इनकी महावीरता की भूरी-भूरी प्रशंसा द्वापर में द्रोण एवं पितामह भीष्म ने भी की।

भारत में पारथ के, रथ केतु कपिराज, गाज्यो सुनि कुरू राज, दल हल बल भो। कहयो द्रोण भीष्म समीर सुत 'महावीर', वीर रस वारिनिधि, जाको बल जल भो ।। भीषम कहत मेरे अनुमान हनुमान, सारिखो त्रिकाल, न त्रिलोक महाबल भो ।। हनु.बा./७।।

त्रेता में इनकी बल की सराहना जामवन्त ने की।

पवन तनय के चरित सुहाये। जामवन्त रघुपति हि सुनाये ।। सु.का./२८ ।।

कलिकाल में गोस्वामी जी ने वन्दना कर सराहना की।

महावीर बिनवऊँ हनुमाना, राम जासु जस आप बखाना ।।

इस प्रकार सतयुग, त्रेता, द्वापर, कलि में आपका यश वेद भगवान बखान करते है।

बांकुरो वीर विरूदैत विरुदावली, वेद बन्दी वदत पैज पूरो ।। हनु.बा./३ ।।

महाबल सीम, महाभीम महाबान इत, 'महावीर' विदित बरायो रघुवीर को ।। हनु.बा./१० ।।

महावीर बांकुरे, बराकी बांह पीर क्यों न, लंकनी ज्यों लात घात ही मरोर मारिये ।। हनु.बा./२३ ।। गोस्वामी जी महाकष्ट के समय 'महावीर' नाम की ही इन्हें शपथ देकर कष्ट निवारण हेतु प्रार्थना की।

आन हनुमान की दोहाई बलवान की। सपथ 'महावीर' की जो रहे पीर बाँह की ।। हनु.बा./२६ ।।

अत: यह महावीर नाम पीड़ा शामक है। इसी ग्रन्थ में **"भूत-पिशाच निकट नहीं आवे, 'महावीर' जब नाम सुनावै।"**

जिनके हृदय में रघुवीर विराजित है। रघुवीर अर्थात् जिसमें निम्न पांच वीरता का समावेश हो। वह रघुवीर है -

1. विद्यावीर आप में सर्वज्ञता है।
2. दया व दानवीर - सुग्रीव एवं विभीषण पर दया की।
3. युद्धवीरता - खरदूषण, बाली व रावण वध किया।

4. धर्मवीरता धर्म रक्षार्थ दारापहार बाली एवं रावण को दण्ड देकर संहार किया।

5. त्याग वीरता सुग्रीव व विभीषण को राज दिया।

इस प्रकार षट्वीरता लिए श्री राम को भी आप हृदय में धारण किये हो तब आपका नाम 'महावीर' है।

विक्रम बजरंगी

आपके विक्रम पराक्रम की प्रशंसा पराम्बिका जानकी जी ने मुक्त कण्ठ से कर पूर्ण विश्वास प्रकट किया। यथा

प्रेषयिष्यति दुर्धर्षो रामो न ह्य परीक्षितम्,

पराक्रमम् विज्ञाय मत्सकाशं विशेषतः ।। वा.रा.सु.का/३६/११।।

अर्थात् श्री जानकी जी ने श्री हनुमान जी से कहा कि शत्रु रावण द्वारा कभी नहीं पराजय होने वाले प्रभु तुम्हें परीक्षोत्तीर्ण कर अर्थात् सर्व प्रकार परीक्षा लेकर ही दूत रूप में मेरे पास भेजा। अतः आप पूर्ण विक्रम पराक्रम परिपूर्ण हो।

पाछे पवन तनय शिर नावा, जानि काज प्रभु निकट बुलावा।

इस प्रकार से 'हनुमत जनम सफल करि माना'।

अतः प्रभु ने भी विक्रमवान समझा और भगवती सीता जी ने भी विक्रमवान कहा। विनय पत्रिका में आपको मृगराज विक्रम कहा - 'आपके ऐश्वर्य को प्रकट किया।

जयति मर्कटाधीश विख्यात मृगराज विक्रम ।। वि.प./३६ ।।

इन्द्र के वज्र के मान को हनन् कर आप हनुमान ही नहीं वरन् वज्र अंगी (बजरंगी) नाम से पुकारे जाने लगे। अर्थात् आपके गुणधर्म आपके उपासक सेवक में भी आते है। अत: बजरंगी की उपासना करने वालों का शरीर भी परिपुष्टता प्राप्त करता है। आज भी प्रायः 'हनुमान, बजरंग-व्यायाम शाला' आपके इन दो नामों से अधिकतर पाई जाती है। अतः इस ग्रन्थ का विक्रम बजरंगी नाम आपके उपासक को शारीरिक एवं आत्मिक बल प्रदान करता ही है। आपका सर्वाङ्ग वज्र ही नहीं वज्र सार है।

वज्रसार सर्वाङ्ग भुज दण्ड भारी ।। वि.प./२६/३।।

'जयति जय वज्रतनु दशन नख मुख विकट सर्वाङ्ग वज्र का वर्णन विनय पत्रिका २५/७।। विहङ्गमाय शर्वाय

वज्र देहाय ते नमः ।। नारद पुराण ७५/१०२।।

आप वज्रअंग ही नहीं वज्र की कठोरता के मद को भी चिबुक से चूर्ण करने वाले हो।

जाकी चिबुक चोट चूरण कियो। रद मद कुलिस कठोर को ।। वि.प./३१ ।।

कुलिस कठोर तन जोरू परे रोर रन ।। हनु.बा./१०।।

अतः विक्रम बजरंगी नाम स्मरण शत्रु संहारक है एवं यह नाम कुमति, कुबुद्धि का निवारक एवं सुमति में सहायक है। समुन्द्रोल्लघंन, वाटिका उजाड़ना, लंका जलाना, रावण की सभा में सभीत देव दिग्पति आदि को देखकर अपने प्रभु की निर्भयता से प्रशंसा करना आपके बल, विक्रम पराक्रम के प्रत्यक्ष प्रमाण है। 'नारद पुराण' में वज्रदेह रूप में स्तुति है।'विहङ्गामाय सर्वाय' वज्र देहाय ते नमः ।। ना. पु. पूर्व खण्ड। 'कुमति निवार' -

निसिचरी लंकनी ने कुमतिवश इन्हें सठ एवं चोर कहा। मुष्ठी प्रहार कर कुमति लंकिनी सुमति के वश होकर इन्हें नगर प्रवेश की आज्ञा ही नहीं दी वरन् इन्हें अपने प्रभु का स्मरण भी कराया। 'हृदय राखि कोशल पुर राजा' कुमति सुमति में बदल गई। 'जो सुख लव संत संग' राम कृपा दृष्टि का बखान कर दिया। राम कृपा कर सुमति के भण्डार श्री हनुमान जी निर्मल मति प्रदा माँ जानकी के परम प्रिय पुत्र होने के कारण इन्हें माँ की कृपा प्राप्त है -

जनक सुता जग जननी जानकी, अतिसय प्रिय करूणानिधान की । **जासु कृपा निर्मल मति पायऊ ।। बा.का./१७/७।।**

अतः ये कुमति निवारक एवं सुमति के संगी है। विभीषण के शब्दों में **'सुमति कुमति सबके उर रहहि। नाथ पुराण निगम अस कहहिं ।। सु.का./४०/५।।**

सभी के हृदय में सुमति कुमति का निवास है। यह श्रुति सम्मत एवं पुराण सम्मत है। इन दोनों की प्रबलता रात दिन की तरह है। कभी सुमति प्रकट हो जाय और कभी कुमति। 'कालकर्म वश होहिं गुसाई, बरबस रात दिवस की नाई' पर हमें कैसे पता लगे कि हमारे हृदय में कब कुमति है और कब सुमति की प्रधानता है? गोस्वामी पाद की दिव्य दृष्टि इसे जानने का सूत्र दे रहे हैं। 'तब उर कुमति बसी विपरीता। हित अनहित मानहूं रिपु प्रीता ।' जब हम अपने हितेशी को अपना शत्रु मानने लगेंगे और अनहित करने वालों में मित्र भाव परिलक्षित हो। समझो कुमति का आगमन। ऐसी दशा में व्यक्ति सही निर्णय नहीं ले पाता है।पथ विचलित हो जाता है। शुभ चिन्तक विभीषण ने दशानन को बहुत समझाया।

'जो आपन चाहै कल्याना, सुजस सुमति शुभ गति सुख नाना।' विभीषण कुमति निवारक हनुमान जी से मिल

चुका है। हनुमान जी उसके सहयोगी साथी बन चुके है। रावण का श्री हनुमान जी से मिलन अवश्य हुआ। सुमति हेतु अपने स्वामी की स्तुति कर उनका दूत कहकर सुबुद्धि हेतु प्रेरित भी किया पर कुमति का कुप्रभाव कुसमय पर जिसके मन को प्रभावित कर रहा हो उस समय सुमति प्रदा का उपदेश समझ में आना असम्भव था तथा सुमति प्रद स्थल भी अनुकूल नहीं था। राज दरबार में राजा को उपदेश देना उचित नहीं। उपदेशक ब्रह्म पाश में बंधा था। उपदेश लेने वाला सिंहासन पर बैठा था। सर्व प्रकार कुसमय था। सभी को निराशा होगी। महारानी मन्दोदरी माल्यवन्त एवं विभीषण सब समझ गये।

तब उर कुमति वसी विपरीता ।। सु.का./४०/७।।

इससे तो यही संकेत है कि अगर कुमति की प्रबलता हमारे हृदय में हो गई हो तब महावीर विक्रम बजरंगी कुमति निवार व सुमति के संगी का आश्रय लेना चाहिये।

कुमति निवार :-

आप बाली की कुमति को देखकर सभीत सुग्रीव के सचिव बनें व संगी बन कर करूणानिधान श्रीराम से मित्रता करा दी व सुमति के संगी बने रहे। आपने सुरपति इन्द्र की कुमति का हरण कर सुमति में परिणित कर दिया। घटना -

पवन नन्दन हनुमान देव नन्दन है और इन्द्र राहु की सहायतार्थ वज्र प्रहार कर दिया। पवन की गिनती देवताओं में है। उनके पुत्र भी देव पुत्रहै। सूर्य भी देव है। पवन देव पुत्र हनुमान ने सूर्य को बचाया। देवराज होकर भी राहू की तरफ से वज्र प्रहार जैसा घृणित कार्य किया गया। इस कार्य को देखकर पवन देव ने चलना बन्द कर दिया। अतः संसार के समष्टि श्वास बन्द हो गये। लज्जित होकर पवन से इन्द्र ने क्षमा मांगी। तब पवन नन्दन ने सूर्य को मुंह से बाहर निकाला और पवन अपनी नित्य गति से प्रवाहित हुए। इस प्रकार इन्द्र की कुमति का निवारण कर सुमति में बदल दी।

बालिवध के पश्चात् सुग्रीव भी राज धनकोष आदि प्राप्त कर पदाभिमानी होकर अपने कर्त्तव्य को भूल गया तब 'इहाँ पवन सुत करहि विचारा, रामकाज सुग्रीव बिसारा' उसी क्षण आपने सुमति का संग करा कर कर्तव्यज्ञान प्रकाशित किया। सुग्रीव की सुमति के विकास हेतु आपने ही 'साम, दाम, दण्ड, भेद चारों नीतियों का बखान कर सुमति प्रदान की।

निकट जाई चरनन्हि सिरू नावा, चारिहूं विधि तेहि कहि समुझावा।

सुमति के संगी :-

दसानन भ्राता विभीषण से आप मिले और जान गये कि यह 'सुमतिवान' है। 'राम राम तेहिं सुमिरन कीन्हा, हृदय

हरष कपि सज्जन चीन्हा।' यह जानकर कि यह सुमति वान सज्जन स्वभाव का व्यक्तित्व इस निसिचर निकर नगर लंका में कैसे अपना जीवन निर्वाह कर रहा है। इससे मुझे हठपूर्वक परिचय कर इस सुमति वान का सहयोगी संगी बनना चाहिये। विभीषण की लंका में रहनि। 'जिमिदसनन्हि महुँ जीभ बिचारी' सुनकर आप द्रवित हो गये और अपने प्रभु श्रीराम जी की रीति, प्रीति प्रतीति का बखान कर दिया -सुनहु विभीषण प्रभु कै रीति। करहिं सदा सेवक पर प्रीति ।। सु.का./६/७।।

ऐसे उदार प्रीति की रीति के चरण शरण में जब विभीषण आये तब सुग्रीवादि ने शरणागत विभीषण का विरोध किया - 'जानि न जाइ निसाचर माया, कामरूप केहि कारण आया' प्रभु ने भी सखा सुग्रीव को नीतिज्ञ कहा।- 'सखा नीति तुम्ह नीकि विचारी' परन्तु आप प्रीतिवान बने रहे। 'मम पन सरनागत भयहारी' कहकर, सुमति के संगी हनुमान जी के बचनो को सत्य कर दिया। तब श्री हनुमान जी ही प्रसन्न हुए।

सुनि प्रभु बचन हरषि हनुमाना, सरनागत वच्छल भगवाना ।।

आप विभीषण को बिना मान के अपने नाम के आगे से मान को घटा कर सम्मान से प्रभु की सरनागति हेतु लेने चले।

जय कृपाल कहि कपि चले, अंगद 'हनु' समेत ।।

आदर पूर्वक श्री विभीषण श्री को आगे कर करूणाकर श्री रघुनन्दन के शरण में ले आये। ऐसे सुमति विभीषण के संगी बनकर आप हनुमान चालीसा में विश्व विख्यात हुए। 'कुमति निवार सुमति के संगी' बनकर विभीषण जी को प्रभु के प्रिय ही नहीं, अतिसय प्रिय बना दिया।

सुनु लंकेश सकल गुन तोरे। ताते तुम्ह 'अतिसय' प्रिय मोरे ।। सु.का./४८/१।। जहाँ सुमति तहाँ सम्पति नाना।

जहां कुमति तहं विपति निदाना ।। सु.का./४०/८।।

फलश्रुति - श्री हनुमान चालीसा पाठ से कुमति नष्ट होती है। सुमति आ जाती है। क्योंकि हनुमान चालीसा पाठ में प्रभु नाम भी विद्यमान 'रामलखन सीता मन बसिया, अन्तकाल रघुपति पुर जाई' आदि एवं श्री प्रभु एवं भक्त हनुमान जी के भी नाम स्मरण है।